साना साना हाथ जोड़ि...

गद्यांश

–मधु कांकरिया

वर्णनात्मक प्रश्न

[2-3 अंक]

(30-40 / 50-60 शब्द)

1. सिक्किम की युवती के कथन में, "मैं इंडियन हूँ।", से स्पष्ट होता है कि अपनी जाति, धर्म-क्षेत्र और संप्रदाय से अधिक महत्वपूर्ण राष्ट्र है। आप किस प्रकार राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य निभाकर देश के प्रति अपना प्रेम प्रकट कर सकते हैं? समझाइए।

[CBSE 2019]

उत्तर : यूमथांग में लेखिका ने चिप्स बेचती हुई एक युवती से पूछा कि क्या तुम सिक्किमी हो। यह प्रश्न सुनकर उसने उत्तर दिया कि, "मैं सिक्किमी नहीं बल्कि इंडियन हूँ।" युवती के इस उत्तर को सुनकर लेखिका को बड़ा ही अच्छा लगा और वह सोचने लगी उस युवती के लिए अपनी जाति, धर्म-क्षेत्र और संप्रदाय कोई मायने नहीं रखता बल्कि उसके लिए राष्ट्र ही सब कुछ है। हम भी इसी प्रकार अपने देश के प्रति अपने कर्तव्य निभाकर अपना प्रेम प्रकट कर सकते हैं।

2. एक गाइड की विशेषताएँ बताते हुए जितेन नार्गे की भूमिका को स्पष्ट कीजिए?

[CBSE 2012, Diksha]

उत्तर : जितेन नार्गे एक कुशल गाइड तो था ही साथ ही उसमें मानवीय गुण भी थे। वह एक कुशल वक्ता था और अपने क्षेत्र की पूरी जानकारी रखता था। एक कुशल गाइड में निम्नलिखित गुण होने चाहिए–

(1) जितेन नार्गे एक कुशल गाइड होने के साथ-साथ कुशल ड्राइवर भी था। उसे न केवल पर्वतीय प्रदेशों में गाड़ी चलाने का अभ्यास था बल्कि वहाँ की प्राकृतिक, भौगोलिक और सामाजिक जानकारी भी थी। एक गाइड को अपने क्षेत्र की पूरी जानकारी होनी चाहिए।

(2) गाइड की वाणी मधुरता और रोचकता से परिपूर्ण होनी चाहिए। इससे पर्यटक बोरियत का अनुभव नहीं करते हैं।

(3) लेखिका का गाइड जितेन नार्गे मानवीय संवेदना से युक्त था इसलिए वह पहाड़ पर पत्थर तोड़ती पहाड़ी युवतियों के जिन्दा रहने की कशमकश को बड़ी ही आसानी से लेखिका के समक्ष व्यक्त कर सका।

3. प्रकृति ने जल-संचय की व्यवस्था किस प्रकार की है? [CBSE 2017]

उत्तर : प्रकृति के जल संचय की व्यवस्था बड़ी ही अनूठी है। सर्दियों में जब पानी जमने लगता है तो प्रकृति बर्फ के रूप में उस जल का संग्रह कर लेती है। हिममंडित हिमालय के शिखर इसी प्रकार के जल-स्तम्भ हैं जो बर्फ के रूप में पानी को एकत्र करते हैं। जब गर्मियों में सर्वत्र पानी के लिए त्राहि-त्राहि मच रही होती है तो इन्हीं हिमशिखरों से जल पिघलकर जलधारा के रूप में सबके सूखे कंठों की प्यास तो बुझाता ही है साथ ही कृषि के लिए भी अनुपम वरदान सिद्ध होता है।

4. पाठ में प्रदूषण के कारण हिमपात में कमी का जिक्र किया है? प्रदूषण के और कौन-कौन से दुष्परिणाम सामने आए हैं? [CBSE 2016]

5. आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है? इसे रोकने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए? [CBSE 2015]

उत्तर : आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ सच में खिलवाड़ ही किया जा रहा है। पहाड़ी स्थलों को आज की पीढ़ी अपना विहार स्थल बना रही है। उनके लिए वहाँ पर नित नवीन निर्माण होते रहते हैं जिससे प्राकृतिक शोभा में कमी आ रही है। वृक्षों को काटकर पर्वतों का सौन्दर्य नष्ट किया जा रहा है। फैक्ट्रियों के अवशिष्ट को नदियों में प्रवाहित कर उस जल को विषाक्त बनाया जा रहा है। वाहनों का धुआँ वातावरण को प्रदूषित कर रहा है। इस प्रकार प्राकृतिक संतुलन बिगड़ कर रह गया है।

इसको रोकने में हमारी भूमिका इस प्रकार होनी चाहिए—

(1) वृक्षों को न तो स्वयं ही काटें और न ही काटने दें।
(2) जब तक आवश्यकता न हो तब तक वाहनों का प्रयोग न करें।
(3) अवशिष्ट पदार्थों को नदियों में न डालें ।
(4) कचरा केवल कूड़ेदान में ही डालें।
(5) प्लास्टिक का प्रयोग न करें।
(6) अधिकाधिक वृक्षारोपण करें।

6. प्रेयर व्हील को देखकर लेखिका के मन में क्या विचार आते हैं? [CBSE 2012]

उत्तर : लॉन्ग स्टॉक में जब लेखिका ने घूमता हुआ चक्र देखा तो जिज्ञासावश जितेन नार्गे से उसके बारे में पूछा। जितेन ने उन्हें बताया कि यह धर्म-चक्र है और ऐसा माना जाता है कि इसे घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं। यह सुनकर लेखिका सोचने लगी कि गंगा नदी के बारे में भी लोगों का यही मानना है। अत: सारे भारत की आत्मा एक ही है। इतनी वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद भी लोगों की धर्म, आस्था, पाप-पुण्य, अंधविश्वास आदि से संबंधित अवधारणाएँ एक जैसी हैं।

7. प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरुप को देखकर लेखिका को कैसी अनुभूति होती है? [CBSE 2012]

8. सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव करवाने में किन-किन लोगों का योगदान होता है, उल्लेख करें। [CBSE 2012]

उत्तर : सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव कराने में निम्नलिखित लोगों का योगदान होता है—

(1) उस स्थान के गाइड जिन्हें वहाँ की सम्पूर्ण जानकारी होती है।
(2) सरकारी कर्मचारी, होटल के मालिक आदि जो उनके रुकने और खाने-पीने की व्यवस्था करते हैं।
(3) सहयात्री, जो अपने हास-परिहास से सफ़र को खुशनुमा बनाए रखते हैं।
(4) फोटोग्राफर, जो यात्रा को यादगार बना देते हैं।
(5) स्थानीय लोग, जो पर्यटकों के स्वागत-सत्कार में बिछ जाते हैं।

9. इस यात्रा-वृतांत में लेखिका ने हिमालय के जिन-जिन रूपों का चित्र खींचा है, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।

10. लेखिका को पहली बार कब एहसास हुआ कि यही चलायमान सौंदर्य जीवन का आनंद है?

उत्तर : लेखिका ने जब प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखा तब उसने किसी ऋषि की तरह एकदम मौन एवं शांत रहकर उस सारे परिदृश्य को अपने भीतर समेट लेना चाहा । वह रोमांचित थी, पुलकित थी। उसे आदिम युग की अभिशप्त राजकुमारी-सा नीचे बिखरे भारी-भरकम पत्थरों पर झरने के संगीत के साथ आत्मा का संगीत सुनने जैसा आभास हो रहा था। उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह देश और काल की सरहदों से दूर बहती धारा बन बहने लगी हो। भीतर की सारी तामसिकताएँ और दुष्ट वासनाएँ इस निर्मल धारा में बह गई हों। उसका मन हुआ कि अनंत समय तक ऐसे ही बहती रहे और इस झरने की पुकार सुनती रहे। प्रकृति के इस सौंदर्य को देखकर लेखिका को पहली बार एहसास हुआ कि यही चलायमान सौंदर्य जीवन का आनंद है।

11. सुबह-सुबह बालकनी की ओर भागकर लेखिका के हाथ निराशा क्यों लगी? उसके निराश मन को हलकी-सी सांत्वना कैसे मिली?

12. 'कवी-लोंग-स्टॉक' के बारे में जितेन नार्गे ने लेखिका को क्या बताया?

13. ऊँचाई की ओर बढ़ते जाने पर लेखिका को परिदृश्य में क्या अंतर नज़र आए?

उत्तर : ऊँचाई की ओर बढ़ते जाने पर लेखिका को परिदृश्य में निम्नलिखित अंतर नज़र आए—

(1) बाज़ार, लोग और बस्तियाँ कम होती जा रही थीं।

(2) चलते-चलते स्वेटर बुनने वाली नेपाली युवतियाँ और कार्टून ढोने वाले बहादुर नेपाली ओझल हो रहे थे।

(3) घाटियों में बने घर ताश के बने घरों की तरह दिख रहे थे।

(4) हिमालय अब अपने विराट रूप एवं वैभव के साथ दिखने लगा था।

(5) रास्ते सँकरे और जलेबी की तरह घुमावदार होते जा रहे थे।

(6) बीच-बीच में रंग-बिरंगे खिले हुए फूल दिखाई दे रहे थे ।

14. यात्राएँ मनुष्य के जीवन की नीरसता को कम करने में सहायक होती हैं, कैसे? स्पष्ट कीजिए।

15. लेखिका ने किस चलायमान सौंदर्य को जीवन का आनंद कहा है? उसका ऐसा कहना कितना उचित है और क्यों?

उत्तर : लेखिका ने निरंतरता की अनुभूति कराने वाले पर्वतों, झरनों, फूलों, घाटियों और वादियों के दुर्लभ नज़ारों को देखकर आश्चर्य से सोचा कि पलभर में ब्रह्माण्ड में कितना घटित हो रहा है। निरंतर प्रवाहमान झरने, वेगवती तिस्ता नदी, सामने उठती धुंध, ऊपर मँडराते आवारा बादल, हवा में हिलते प्रियुता और रूडोडेंड्रो के फूल सभी लय और तान में प्रवाहमान हैं। ऐसा लगता है कि ये चैरवेति-चैरवेति अर्थात् चलते रहने का संदेश दे रहे हैं। उसका ऐसा कहना पूर्णतया उचित है क्योंकि इसी चलायमान सौंदर्य में जीवन का वास्तविक आनंद छिपा है।

16. लेखिका ने पहाड़ी औरतों और आदिवासी औरतों में क्या समानता महसूस की?

उत्तर : लेखिका ने देखा कि कोमल कायावाली औरतें हाथ में कुदाल और हथौड़े लिए भरपूर ताकत से पत्थरों पर मार रही थीं। इनमें से कुछ की पीठ पर बँधी डोको में उनके बच्चे भी बँधे थे। वे भूख से लड़ने के लिए मातृत्व और श्रम साधना साथ-साथ ढो रही थीं। ऐसा ही पलामू और गुमला के जंगलों में लेखिका ने देखा था कि आदिवासी युवतियाँ पीठ पर बच्चे को कपड़े से बाँधकर पत्तों की तलाश में वन-वन डोलती थीं। उनके पाँव फूले हुए थे और इधर पहाड़ी औरतों के हाथों में श्रम के कारण गाँठे पड़ गई थीं।

17. पहाड़ के निवासियों का जीवन परिश्रमपूर्ण एवं कठोर होता है, सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

18. देश की सीमा पर बैठे फ़ौजी किस तरह से कठिनाइयों का मुकाबला करते हैं?

उत्तर : देश की सीमा पर बैठे फ़ौजी अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में देश की रक्षा करते हुए कठिनाइयों का मुकाबला करते हैं। ये फ़ौजी रेगिस्तान की गरम लू तथा पचास डिग्री सेल्सियस से अधिक गरमी में हाँफ-हाँफकर देश की चौकसी करते हैं। दूसरी ओर ये भारत के उत्तरी एवं पूर्वोत्तर राज्यों की सीमा पर माइनस पंद्रह डिग्री सेल्सियस में काम करते हैं। वे पेट्रोल के अलावा सब कुछ जमा देने वाले वातावरण की भी परवाह नहीं करते हैं।

19. पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि देश की सीमा पर बैठे हुए सैनिकों के जीवन से किन-किन जीवन मूल्यों को अपनाया जा सकता है?

20. प्रकृति ने जल संचय की व्यवस्था किस प्रकार की है?

उत्तर : प्रकृति ने जल-संचय की बड़ी अद्‌भुत व्यवस्था की है। प्रकृति सर्दियों में पर्वत शिखरों पर बर्फ़ के रूप में गिरकर जल का भंडारण करती है। हिम-मंडित पर्वत-शिखर एक प्रकार के जल-स्तंभ हैं, जो गर्मियों में जलधारा बनकर करोड़ों कंठों की प्यास बुझाते हैं। नदियों के रूप में बहती जलधाराएँ अपने किनारे बसे नगर-गाँवों में जल-संसाधन के रूप में तथा नहरों के द्‌वारा एक विस्तृत क्षेत्र में सिंचाई करती हैं और अंततः सागर में जाकर मिल जाती हैं। सागर से जलवाष्प बादल के रूप में उड़ते हैं, जो मैदानी क्षेत्रों में वर्षा तथा पर्वतीय क्षेत्रों में बर्फ़ के रूप में बरसते हैं। इस प्रकार 'जल-चक्र' द्‌वारा प्रकृति ने जल-संचयन तथा वितरण की व्यवस्था की है।